Journal of Social Issues and Development (JSID)
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 3 & 4)
Special Combined Issue (September 2025 — April 2026. pp. 174-185)

लोकतंत्र में मतदान व्यवहार के अनुशीलन का महत्वः एक समालोचनात्मक अवलोकन

विनीत कुमार*
मनस्वी सेमवाल**

सारांश

लोकतांत्रिक व्यवस्था का मूल आधार नागरिकों की सहभागिता और उनकी राजनीतिक चेतना है, जिसका प्रत्यक्ष प्रदर्शन चुनाव और मतदान के माध्यम से होता है। मतदान व्यवहार केवल किसी व्यक्ति द्वारा दिया गया मत नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक समाजीकरण, सामाजिक संरचना, आर्थिक परिस्थितियों, मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों तथा संचार माध्यमों के प्रभाव का संयुक्त परिणाम होता है। भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में यह अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारत जैसे विशाल, बहुसांस्कृतिक और बहुवर्गीय समाज में मतदान व्यवहार बहुआयामी है, जो सामाजिक संरचना, जाति, धर्म, वर्ग, शिक्षा, क्षेत्रीय पहचान, आर्थिक परिस्थितियों, मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों तथा मीडिया और सोशल मीडिया के प्रभाव से निर्मित होता है। भारत में मतदान धीरे–धीरे केवल पहचान आधारित राजनीति से आगे बढ़कर प्रदर्शन, विकास, सुशासन और नीतिगत प्राथमिकताओं की ओर उन्मुख हो रहा है महिलाओं और युवाओं की सक्रिय भूमिका ने लोकतंत्र को ओर अधिक समावेशी और जीवंत बनाया है। यह शोधपत्र लोकतंत्र में मतदान व्यवहार के अनुशीलन

* शोधार्थी, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, ग्राफिक एरा डिम्ड विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड।
** असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, ग्राफिक एरा डिम्ड विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड।

के महत्व का विश्लेषणात्मक अवलोकन प्रस्तुत करता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मतदान व्यवहार का व्यवस्थित अनुशीलन लोकतांत्रिक स्थिरता, नीति–निर्धारण, सामाजिक समावेशन तथा नागरिक चेतना को समझने के लिए अनिवार्य है।

मुख्य शब्दः लोकतंत्र, मतदान व्यवहार, राजनीतिक दल, सोशल मीडिया, लोकतांत्रिक स्थायित्व।

प्रस्तावना

लोकतंत्र मूलतः जनता की भागीदारी, उनकी राजनीतिक चेतना और शासन से जुड़ी उत्तरदायित्व भावना पर आधारित व्यवस्था है। किसी भी लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके नागरिक चुनावों में किस प्रकार भाग लेते हैं और किस आधार पर राजनीतिक निर्णय लेते हैं। मतदान इस लोकतांत्रिक सहभागिता का सबसे महत्वपूर्ण साधन है, क्योंकि इसके माध्यम से नागरिक न केवल अपने प्रतिनिधियों का चयन करते हैं, बल्कि शासन की दिशा, नीतिगत प्राथमिकताओं और लोकतांत्रिक मूल्यों को भी निर्धारित करते हैं। इसीलिए मतदान व्यवहार का अध्ययन लोकतंत्र की वास्तविक प्रकृति और उसके कार्य–कलापों को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक हो जाता है।[1]

भारतीय संदर्भ में मतदान व्यवहार का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहाँ की जनसंख्या संरचना, सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक बहुलता और राजनीतिक परंपराएँ इसे विशिष्ट बनाती हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में लगभग 91 करोड़ मतदाता पंजीकृत थे, जिनमें से 67.4 प्रतिशत ने मतदान किया, जबकि 2024 में यह संख्या लगभग 97 करोड़ मतदाताओं तक पहुँची और औसत मतदान 66 प्रतिशत दर्ज किया गया।[2] यह केवल संख्यात्मक उपलब्धि नहीं, बल्कि नागरिकों की लोकतंत्र के प्रति आस्था और सक्रियता का प्रतीक है। यह तथ्य स्पष्ट संकेत देता है कि भारतीय मतदाता न केवल चुनावी प्रक्रिया में रूचि रखते हैं, बल्कि लोकतांत्रिक प्रणाली के निरंतर सुदृढ़ीकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मतदान व्यवहार केवल इतना भर नहीं है कि कौन किसे वोट देता है, बल्कि यह एक व्यापक और जटिल अवधारणा है, जो यह समझने का प्रयास करती है कि मतदाता किस कारण से वोट देते है, किस आधार पर निर्णय लेते हैं, कौन–से सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक कारक उनके निर्णय को प्रभावित करते हैं तथा इन निर्णयों का लोकतंत्र पर क्या प्रभाव पड़ता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखें तो भारतीय मतदान व्यवहार जाति, धर्म, वर्ग, समुदाय, परंपरा और सामाजिक पहचान से गहराई से जुड़ा हुआ है। वहीं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण दर्शाता है कि राजनीतिक निष्ठा, नेतृत्व की छवि, भावनात्मक अपील और प्रतिकात्मक कारक भी मतदाता के निर्णय में महत्वूपर्ण भूमिका निभाते हैं।[3]

आर्थिक दृष्टिकोण से भारतीय मतदाता विकास, रोजगार, महंगाई, सामाजिक सुरक्षा और कल्याणकारी योजनाओं से प्रभावित होते हैं। पिछले एक दशक में यह प्रवृत्ति और अधिक मजबूत हुई है कि मतदाता केवल पहचान–आधारित राजनीति पर निर्भर नहीं रह गए, बल्कि वे शासन के प्रदर्शन, नीतिगत प्रभावों और विकासात्मक परिणामों के आधार पर भी निर्णय लेने लगे हैं। इस प्रकार भारतीय मतदान व्यवहार पहचान–आधारित राजनीति से प्रदर्शन–आधारित राजनीति की ओर क्रमिक रूप से बढ़ रहा है, जो लोकतंत्र के परिपक्व होने का संकेत है।[4]

इसके अतिरिक्त मीडिया और विशेष रूप से सोशल मीडिया ने मतदान व्यवहार को नया आयाम दिया है। डिजिटल क्रांति के कारण राजनीतिक सूचना पहले से अधिक तीव्र, व्यापक और प्रभावशाली हो गई है। टीवी, समाचार–पत्र, न्यूज पोर्टल, सोशल मीडिया कैंपेन, वायरल वीडियो और ऑनलाइन राजनीतिक विमर्श मतदाताओं की सोच, धारणा और निर्णय को प्रभावित करते हैं। इससे लोकतंत्र अधिक संवादपरक और जीवंत हुआ है, वहीं फेक न्यूज ओर सूचना–भ्रम जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इसलिए आधुनिक लोकतंत्र में मतदान व्यवहार पर सोशल मीडिया प्रभाव के प्रभाव को समझना अनिवार्य हो गया है।[5]

भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में यह अध्ययन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यहाँ महिलाओं, और युवाओं की बढ़ती भागीदारी मतदान व्यवहार को नया स्वरूप दे रही है। 2019 एवं 2024 के चुनावों में कई राज्यों में महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरूषों से अधिक रहा, जो समाज में लोकतांत्रिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत है।[6] इसी प्रकार युवा मतदाता के लिए रोजगार, शिक्षा और स्वतंत्रता जैसे विषय उनके लोकतांत्रिक फैसलों को प्रभावित कर रहे हैं।

इस प्रकार लोकतंत्र में मतदान व्यवहार का अध्ययन व्यावहारिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक है। इसके माध्यम से न केवल चुनावी पैटर्न को समझा जा सकता है, बल्कि लोकतांत्रिक स्थिरता, राजनीतिक वैधता, नीति–निर्माण, सामाजिक न्याय, जनसभागिता और भविष्य की लोकतांत्रिक दिशा का भी आंकलन संभव होता है। इसी कारण आधुनिक समय में मतदान व्यवहार का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिसका भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में अध्ययन और भी आवश्यक हो जाता है।

साहित्य समीक्षा

मतदान व्यवहार का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कसंगत चयन दृष्टिकोण के आधार पर किया गया है। कैम्पबेल एवं अन्य (1960) ने यह स्पष्ट किया कि मतदान मुख्यतः दलगत पहचान, राजनीतिक निष्ठा और पारिवारिक व सामाजिक प्रभाव से निर्धारित होता है। इस दृष्टिकोण में मनोवैज्ञानिक विश्वास, आकर्षण और प्रवृत्तियाँ प्रमुख हैं। वहीं आमण्ड एवं वर्बा (1963) ने नागरिक संस्कृति, राजनीतिक समाजिकरण और सामाजिक संरचना को मतदान व्यवहार की केंद्रीय धुरी माना। उन्होंने इस बात पर जोर दिया

कि जिन समाजों में नागरिक सक्रिय और जागरूक होते हैं, वहाँ लोकतंत्र अधिक स्थिर रहता है।

लिपसेट (1959) का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने लोकतंत्र और आर्थिक विकास के बीच संबंध स्थापित करते हुए कहा कि जहाँ आर्थिक स्थिरता, शिक्षा और सामाजिक प्रगति होती है, वहाँ मतदान व्यवहार अधिक जागरूक और उत्तरदायी होता है। नोर्रिस (2004) ने आधुनिक संदर्भों में यह स्थापित किया कि वैश्वीकरण, तकनीकि क्रांति और मीडिया शक्तियाँ मतदान व्यवहार को नया स्वरूप दे रही हैं। डिजिटल लोकतंत्र, सोशल मीडिया और वैश्विक राजनीतिक प्रवाह ने मतदाताओं के निर्णय–प्रक्रिया को नया आयाम दिया है।

भारतीय संदर्भ में सीएसडीएस– लोकनीति और विभिन्न शोधकर्ताओं के अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि भारत में मतदान व्यवहार जाति, धर्म, वर्ग, आर्थिक स्थिति, शिक्षा स्तर, क्षेत्रीय पहचान और मीडिया प्रभाव से गहराई से जुड़ा है। विशेष रूप से पिछले दो दशकों में महिलाओं और युवाओं की बढ़ी सहभागिता ने मतदान पैटर्न को बदला है।

उद्देश्य

1. लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदान व्यवहार के अनुशीलन के महत्व को स्पष्ट करना।
2. मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं संचारात्मक कारकों की पहचान करना।
3. मतदान व्यवहार के लोकतांत्रिक स्थिरता और राजनीतिक वैधता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

1. लोकतंत्र में मतदान व्यवहार का अनुशीलन क्यों आवश्यक है?
2. मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन–कौन से हैं?
3. क्या मतदान व्यवहार का अध्ययन लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में सहायक है?

शोध परिकल्पना

1. मतदान व्यवहार का लोकतांत्रिक स्थिरता एवं राजनीतिक वैधता पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
2. सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारक मतदान व्यवहार के प्रमुख निर्धारक कारक होते हैं।
3. मतदान व्यवहार का व्यवस्थित अध्ययन लोकतांत्रिक सुधारों के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करता है।

शोध प्रविधि

यह शोध कार्य वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। इसमें मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों जैसे– पुस्तकों, शोध–पत्रों, रिर्पोटों, चुनाव आंकड़ों तथा पूर्ववर्ती अध्यनों से प्राप्त सामग्री का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोत के आधार पर मतदान व्यवहार के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन सैद्धांतिक एवं व्याख्यात्मक आधार पर केन्द्रित रखा गया है। जोकि किसी विशेष क्षेत्रीय चुनाव विश्लेषण के अतिरिक्त व्यापक लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य की समझ विकसित करता है।

लोकतंत्र में मतदान व्यवहार

लोकतंत्र में मतदान केवल राजनीतिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं का जटिल परिणाम है। मतदाता का निर्णय केवल तत्क्षणिक चुनावी माहौल से प्रभावित नहीं होता, बल्कि उसके दीर्घकालिक सामाजिक अनुभव, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा स्तर, मीडिया संपर्क, आर्थिक स्थिति तथा राजनीतिक विश्वास संरचना उसकी मतदान प्रवृत्ति को आकार देती है। इस प्रकार लोकतंत्र को समझने के लिए मतदान व्यवहार का अध्ययन अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि इसके माध्यम से जनता की वास्तविक सोच, लोकतांत्रिक चेतना तथा राजनीतिक भागीदारी का सही चित्र परिलक्षित होता है।

मतदान व्यवहार को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है–

रॉबर्ट इ0 लेन के अनुसार– मतदान केवल एक चयन क्रिया नहीं, बल्कि राजनीति में मनोवैज्ञानिक संलग्नता का प्रतीक है।

कैम्पबेल एवं अन्य के अनुसार– मतदान व्यवहार दलगत पहचान, प्रत्याशी मूल्यांकन तथा मुद्दों द्वारा निर्धारित होता है।

आल्मंड एवं वर्बा कहते हैं– मतदान व्यवहार राजनीतिक संस्कृति की वह अभिव्यक्ति है जो व्यक्ति की राजनीतिक व्यवस्था के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती है।

मतदान व्यवहार की प्रकृति

मतदान व्यवहार का स्वरूप जटिल होता है। मतदान व्यवहार केवल राजनीतिक आयाम से जुड़ा नहीं है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और मीडिया प्रभावों का भी परिणाम है। इसीलिए मतदान व्यवहार को किसी एक कारण से नहीं समझा जा सकता, बल्कि यह विभिन्न कारकों का परिणाम है। मतदान व्यवहार स्थिर नहीं होता, बल्कि गतिशील होता है। यह समय, परिस्थिति और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य के अनुसार बदलता रहता है। शिक्षा, मीडिया, सोशल मीडिया और राजनीतिक जागरूकता ने मतदान व्यवहार की दिशा को समय के साथ परिवर्तित किया है। मतदान व्यवहार का स्वरूप मनोवैज्ञानिक होता है। मतदान

व्यवहार व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों, राजनीतिक निष्ठा, भावनाओं और राजनीतिक पहचान से प्रभावति होता है। वहीं मतदान व्यवहार व्यक्ति की सामाजिक पृष्ठभूमि से गहराई से प्रभावित होता है। जाति, धर्म, वर्ग, भाषा, शिक्षा और परिवार जैसे तत्व मतदान संबंधी निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।[7]

मतदाता का आर्थिक हित, सरकारी योजनाओं से लाभ, रोजगार और आय स्तर भी मतदान को प्रभावित करते हैं। गरीब वर्ग सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों से प्रभावित होकर मतदान करता है, जबकि मध्यम वर्ग कर–नीतियों और आर्थिक स्थिरता पर ध्यान देता है। मतदान व्यवहार की प्रकृति राजनीतिक होती है। राजनीतिक विचारधारा, पार्टी की नीति, नेतृत्व की छवि, चुनावी वादे और राजनीतिक संस्कृति भी मतदान व्यवहार का निर्धारण करती है। मतदान व्यवहार का स्वरूप सांस्कृतिक और ऐतिहासिक भी होता है। किसी देश की संस्कृति, परंपरा और ऐतिहासिक अनुभव मतदान के निर्णयों को आकार देते हैं। पश्चिमी देशों में लोकतांत्रिक संस्कृति का गहरा प्रभाव मतदान व्यवहार पर देखा जाता है। मतदान व्यवहार का मूल्यपरक और नैतिक प्रकृति भी होती है। कुछ मतदाता नैतिकता, ईमानदारी, पारदर्शिता और देशभक्ति जैसे मूल्यों के आधार पर मतदान करते हैं। वे मुद्दों की अपेक्षा राष्ट्रहित या नीति के आधार पर निर्णय लेते हैं। आधुनिक युग में मतदान व्यवहार की प्रकृति पर मीडिया, विशेषकर सोशल मीडिया का गहरा प्रभाव पड़ रहा है।[8] अतः डिजिटल युग में 'मीडिया एजेंडा' और 'इन्फ्लुएंसर पॉलिटिक्स' जैसे तत्व महत्वपूर्ण हो गए है।

मतदान व्यवहार एक सामाजिक प्रक्रियाः सामाजिक संरचना का प्रभाव

सामाजिक संरचना मतदान व्यवहार के निर्धारण में केंद्रीय भूमिका निभाती है। जाति, धर्म, वर्ग, शिक्षा, परिवार तथा समुदाय मतदाता के राजनीतिक व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं। जैसे–भारत में कई दशकों तक चुनावी राजनीति जातिगत समीकरणों के आधार पर संचालित रही है। विशेष समुदायों में किसी विशेष दल के प्रति स्थायी राजनीतिक झुकाव देखने को मिलता है। इसको समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण सामूहिक मतदान प्रवृत्ति के रूप में परिभाषित करता है।

जातिगत समूहबद्धता, सामुदायिक हितों की रक्षा की भावना तथा सामूहिक पहचान, मतदाताओं को किसी विशेष राजनीतिक विकल्पों की ओर प्रेरित करती है। जैसे–उत्तर भारत के कई राज्यों में अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा कुछ धार्मिक समुदायों में विशिष्ट दलों के प्रति स्थायी समर्थन देखा गया है। यह केवल भावनात्मक नहीं बल्कि ऐतिहासिक व सामाजिक अनुभव से निर्मित राजनीतिक विश्वास का परिणाम है।[9]

भारत में पारिवारिक राजनीतिक संस्कृति भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कई घरों में राजनीतक पसंद पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रहती है। हालांकि पिछले एक दशक में शहरीकरण, शिक्षा विस्तार और सामाजिक गतिशीलता के कारण व्यक्तिगत आधारित मतदान निर्णय बढ़े

हैं। विशेष रूप से प्रथम मतदाता और शहरी मध्यवर्ग अब अधिक स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय ले रहे हैं। यह परिवर्तन भारत के लोकतंत्र को अधिक परिपक्व और विवेकपूर्ण दिशा में ले जाने का संकेत देता है।[10]

इस संबंध में विभिन्न केस स्टडी के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि उत्तर प्रदेश में यादव, दलित, ब्राह्मण, मुस्लिम जैसे समुदायों के मतदान व्यवहार में स्पष्ट स्थायी राजनीतिक झुकाव देखने को मिलता रहा है। सामाजिक पहचान आधारित राजनीतिक दलों ने यहाँ चुनावी राजनीति को लंबे समय तक प्रभावित किया है। केरल में उच्च शिक्षा स्तर, राजनीतिक सजगता और सामाजिक जागरूकता के कारण मतदान व्यवहार अधिक वैचारिक और नीतिगत रहा है। यहाँ मतदान प्रतिशत निरन्तर 70 प्रतिशत से अधिक रहता है, जो लोकतांत्रिक सक्रियता का प्रतीक है। वहीं तमिलनाडु में राजनीतिक चेतना द्रविड आंदोलन से गहराई से जुड़ी है। भाषा, क्षेत्रीय स्वाभिमान और सामाजिक न्याय के मुद्दे यहाँ मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। जाति प्रभाव होते हुए भी प्रदर्शन आधारित मतदान की प्रवृत्ति अधिक दिखती है।[11]

यही स्थिति पश्चिमी लोकतंत्रों में वर्ग–आधारित मतदान की रही है। ब्रिटेन में श्रमिक वर्ग का झुकाव लंबे समय तक लेबर पार्टी की ओर रहा, जबकि उच्च मध्यवर्ग का झुकाव कंजर्वेटिव पार्टी की ओर देखा गया। यह दर्शाता है कि सामाजिक स्थिति और राजनीतिक प्राथमिकताओं का गहरा संबंध है।[12] इस प्रकार सामाजिक संरचना मतदान व्यवहार का प्रमुख निर्धारक है और इसका अध्ययन लोकतांत्रिक यथार्थ का समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक कारकों की निर्णायक भूमिका

मतदान व्यवहार केवल तर्कसंगत निर्णय का परिणाम नहीं है, बल्कि इसमें भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और प्रतीकात्मक तत्व गहराई से जुड़े हैं। मतदाताओं में राजनीतिक पहचान, दलगत निष्ठा और नेतृत्व के प्रति भावनात्मक विश्वास मुख्य भूमिका निभाते हैं। कई बार मतदाता किसी विशेष पार्टी को केवल इसलिए समर्थन नहीं देते कि उसकी नीतियाँ श्रेष्ठ हैं, बल्कि इसलिए देते हैं क्योंकि वे स्वयं को उसके साथ भावनात्मक रूप से जुड़ा महसूस करते हैं।

यही कारण है कि चुनावों के दौरान लहर, मनोदशा और भावनात्मक अपील अत्यधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं। जैसे–भारत में आपालकाल के बाद 1977 का लोकसभा चुनाव केवल तर्कपूर्ण नीतिगत मतदान नहीं था, बल्कि जनता के भावनात्मक असंतोष का परिणाम था। इसी प्रकार 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद भावनात्मक लहर के कारण भारी बहुमत मिला। इससे स्पष्ट होता है कि भावनात्मक परिस्थितियाँ मतदाता के निर्णय को प्रभावित करती हैं।[13]

इसके अतिरिक्त नेतृत्व की छवि का प्रभाव भी बहुत गहरा होता है। करिश्माई, विश्वसनीय और सशक्त नेता मतदाताओं पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। इसके विपरीत

अविश्वसनीय नेतृत्व लोकतांत्रिक विश्वास को कमजोर करता है।[14] आधुनिक राजनीतिक मनोविज्ञान इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मतदाता हमेशा पूर्ण तर्क से संचालित नहीं होते, बल्कि वे भावनाओं, प्रतीकों और विश्वास के मिश्रण से निर्णय लेते हैं।

आर्थिक परिस्थितियाँ और तर्कसंगत मतदाता सिद्धान्त

आर्थिक परिस्थितियाँ मतदान व्यवहार का महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व हैं। मतदाता अपने आर्थिक हितों, रोजगार सुरक्षा, विकास के अवसरों, मूल्य स्थिरता और सरकारी नीतियों के आर्थिक प्रभावों को ध्यान में रखकर मतदान करते हैं। इसे तर्कसंगत मतदाता सिद्धान्त के रूप में राजनीतिक अर्थशास्त्र में समझाया गया है।

यदि किसी सरकार के कार्यकाल में आर्थिक प्रगति, रोजगार वृद्धि और विकास योजनाओं का लाभ व्यापक समाज तक पहुंचता है तो मतदाता पुनः उस सरकार को समर्थन देने की प्रवृत्ति रखते हैं। इसके विपरीत आर्थिक अस्थिरता, बेरोजगारी वृद्धि और महंगाई में बढ़ोतरी के कारण मतदाता सरकार के विरोध में मतदान करते हैं। यह परफॉर्मेंस बेस्ड वोटिंग बिहेवियर का उदाहरण है।[14]

भारतीय मतदाता अब केवल पहचान आधारित राजनीतिक निर्णय नहीं लेते, बल्कि उनके निर्णय आर्थिक और विकासात्मक विषयों से भी प्रभावित होते हैं। 2019 के चुनावों में मतदाताओं के बड़े वर्ग ने रोजगार, बनियादी ढाँचा, कल्याणकारी योजनाओं, गरीबी उन्मूलन, जन–धन, उज्जवला, स्वच्छ भारत, ग्रामीण सड़क योजना जैसे मुद्दों के आधार पर मतदान निर्णय लिया। इसी प्रकार कई राज्यों में सत्ता परिवर्तन का कारण आर्थिक संतुष्टि या असंतुष्टि रही है।

भारत में कई राज्यों के चुनावों में देखा जाता है कि जहाँ विकास पर आधारित सुशासन मॉडल प्रभावी रहा वहाँ सत्ताधारी दलों को पुनः जनादेश प्राप्त हुआ है। केस स्टडी बताती है कि गुजरात में आर्थिक विकास मॉडल, औद्योगिक विस्तार और बुनियादी ढाँचे ने मतदाताओं को प्रभावित किया है, लगातार शासन स्थिरता इसका प्रमाण है। बिहार में सड़क, बिजली, कानून व्यवस्था सुधार के बाद मतदान पैटर्न में परिवर्तन देखा गया है। मतदाता अब केवल जातिगत आधार पर नहीं बल्कि विकास के आधार पर मतदान करने लगे हैं।[15] वहीं 1970 के दशक में वैश्विक आर्थिक अस्थिरता और महंगाई ने कई लोकतांत्रिक देशों की सरकारों को सत्ता से बाहर कर दिया।[16] यह दर्शाता है कि आर्थिक परिस्थितियाँ मतदाताओं की प्राथमिकताओं को व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं।

मीडिया और सोशल मीडिया की निर्णायक भूमिका

मीडिया विशेषकर सोशल मीडिया मतदान व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती है। आज का मतदाता केवल पारंपरिक राजनीतिक भाषणों और प्रचार रैलियों के भरोसे नहीं रहता,

बल्कि वह टेलीविजन डिबेट, डिजिटल कैंपेन, सोशल मीडिया पोस्ट, वायरल वीडियो, डिजिटल नैरेटिव और ऑनलाइन राजनीतिक विमर्श से प्रभावित होता है।

मीडिया केवल सूचना नहीं देता, बल्कि सूचना की विशिष्ट व्याख्या प्रस्तुत करता है। इससे मतदाताओं की धारणा, दृष्टिकोण और मतदान निर्णय प्रभावित होते हैं। मीडिया एजेंडा सेट करता है, मुद्दों को प्राथमिकता देता है और मतदाताओं का ध्यान विशिष्ट विषयों की ओर मोड़ता है। यही एजेंड़ा निर्धारण सिद्धांत मतदान मनोविज्ञान को प्रभावित करता है।

सोशल मीडिया का प्रभाव और भी गहरा है। यह केवल सूचना का माध्यम नहीं बल्कि राजनीतिक सहभागिता का मंच बन गया है। युवा मतदाता डिलिटल प्लेटफार्मों पर राजनीतिक बहसों में भाग लेते हैं। विचार साझा करते हैं और कई बार डिजिटल अभियानों के माध्यम से निर्णय लेते हैं। हाल के वर्षों में कई चुनावों में सोशल मीडिया ने राजनीतिक धाराओं को मोड़ने का कार्य किया है। जैसे– अमेरिका, ब्रिटेन, भारत तथा अन्य लोकतांत्रिक देशों के चुनावों में डिजिटल प्रचार निर्णायक सिद्ध होता है।[17]

हांलांकि इसके नकारात्मक पहलू भी हैं जिसमें फेक न्यूज, राजनीतिक भ्रम, डिजिटल प्रोपेगेंडा और सूचनाओं को बदलना शामिल हैं। ये लोकतांत्रिक चेतना को कमजोर भी कर सकते हैं, इसलिए मतदान व्यवहार का अध्ययन मीडिया प्रभाव को समझे बिना अधूरा रहेगा।

महिलाओं की सहभागिता और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण

भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की मतदान भागीदारी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। 2019 के लोकसभा चुनाव में महिलाओं का मतदान प्रतिशत 67.18 रहा, जो पुरूषों से लगभग बराबर था। वहीं 2024 के चुनाव में भी महिला सहभागिता ने मजबूत उपस्थिति दर्ज की। जबकि कई राज्यों में महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरूषों से अधिक दर्ज किया गया। पश्चिम बंगाल में महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरूषों से अधिक रहा। सरकारी योजनाएँ जैसे कन्याश्री, स्वास्थ्य योजनाएँ आदि महिला मतदाताओं को प्रभावित करती हैं। हाल ही में सम्पन्न हुए बिहार चुनाव में मुख्यमंत्री रोजगार योजना ने महिलाओं के मतदान प्रभावित किया। पर्वतीय राज्यों में जैसे उत्तराखण्ड में महिलाओं ने अत्यधिक मतदान कर लोकतांत्रिक चेतना का उदाहरण प्रस्तुत किया है।[18]

यह दर्शाता है कि भारतीय लोकतंत्र में महिलाएँ केवल सहभागी ही नहीं बल्कि निर्णायक मतदाता समूह बन चुकी हैं। इससे लोकतंत्र अधिक समावेशी और प्रतिनिधिक बनता है। महिलाओं के मतदान निर्णय सामाजिक सुरक्षा, कल्याणकारी योजनाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, गैस कनेक्शन, आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक सम्मान जैसे मुद्दों से प्रभावित होते हैं।[19] इससे स्पष्ट होता है कि लोकतंत्र में मतदान व्यवहार का अध्ययन तभी पूर्ण है जब उसमें लैंगिक दृष्टिकोण शामिल हो।

युवाओं और प्रथम–मतदाताओं की भूमिका

युवा मतदाता लोकतंत्र में परिवर्तनकारी भूमिका निभाते हैं। उनके मतदान निर्णय अक्सर केवल परंपरागत प्रभावों से निर्धारित नहीं होते, बल्कि वे शिक्षा, रोजगार अवसरों, पहचान राजनीति, डिजिटल प्रभाव और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के मुद्दों पर निर्णय लेते हैं। 2019 में 1.5 करोड़ और 2024 में उससे अधिक प्रथम मतदाता शामिल हुए।[20] सोशल मीडिया उनकी चेतना को निर्मित करता है। हालांकि फेक न्यूज चुनौतियाँ भी उत्पन्न करती है।

युवा पीढ़ी विकास, नवाचार, रोजगार, डिजिटल सशक्तिकरण और पारदर्शी शासन को प्राथमिकता देती है। इसलिए मतदान व्यवहार का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि भविष्य के लोकतंत्र की दिशा किस ओर जाएगी। यदि युवाओं का मतदान रूझान लोकतांत्रिक मूल्यों के पक्ष में है, तो आने वाला लोकतांत्रिक भविष्य मजबूत होगा।

राजनीतिक भागीदारी, लोकतांत्रिक वैधता और स्थिरता पर प्रभाव

मतदान व्यवहार लोकतांत्रिक स्थिरता और राजनीतिक वैधता का महत्वपूर्ण आधार है। यदि मतदाता सक्रिय, जागरूक और भागीदारीपूर्ण होते हैं तो लोकतंत्र अधिक सुदृढ़ बनता है। मतदान केवल सरकार चुनने का साधन नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक प्रणाली के प्रति जनता के विश्वास का प्रतीक है।

नागरिकों का नियमित और जागरूक मतदान लोकतांत्रिक संस्थाओं को वैधता प्रदान करता है। यदि मतदान प्रतिशत अधिक हो, विविध सामाजिक समूहों की भागीदारी सुनिश्चित हो और मतदान जागरूकता आधारित हो, तो लोकतंत्र अधिक प्रतिनिधिक और न्यायसंगत बनता है।[21]

इसके विपरीत यदि मतदान व्यवहार उदासीन, भावनात्मक या असचेतन हो, तो लोकतंत्र की गुणवत्ता प्रभावित होती है। कई देशों में कम मतदान प्रतिशत लोकतांत्रिक संकट का संकेत माना जाता है। इससे लोकतंत्र पर अविश्वास, नागरिक अलगाव तथा राजनीतिक अस्थिरता बढ़ने की आंशका होती है। इसलिए मतदान व्यवहार का अध्ययन लोकतांत्रिक स्वास्थ्य का मापक है।

निष्कर्ष

लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदान व्यवहार केवल चुनावी प्रक्रिया का हिस्सा नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा, शक्ति और भविष्य का दर्पण है। भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जहाँ निरतंर बढती मतदाता सहभागिता लोकतंत्र के प्रति जनता के विश्वास और प्रतिबद्धता को दर्शाती है। अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि भारतीय मतदान व्यवहार सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और मीडिया संबंधी कारकों के संयुक्त प्रभाव से निर्मित होता है। जाति, धर्म, वर्ग

और समुदाय जैसी पारंपरिक संरचनाएँ अभी भी प्रभावी हैं, लेकिन इसके साथ–साथ विकास, सुशासन, कल्याणकारी योजनाएँ, आर्थिक स्थिरता, नेतृत्व की छवि और प्रदर्शन आधारित राजनीति भी निर्णायक भूमिका निभा रही हैं।

महिलाओं और युवाओं की बढ़ती भागीदारी ने लोकतंत्र को अधिक जीवंत, समावेशी और उत्तरदायी बनाया है। मीडिया और सोशल मीडिया ने राजनीतिक चेतना को व्यापक बनाया है, यद्यपि यह नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न करता है। अध्ययन यह इंगित करता है कि मतदान व्यवहार का वैज्ञानिक और निरंतर अध्ययन लोकतांत्रिक स्थिरता, राजनीतिक वैधता, नीति–निर्माण, सामाजिक न्याय और नागरिक सशक्तिकरण के लिए अत्यंत आवश्यक है। अंततः यह कहा जा सकता है कि जागरूक, विवेकपूर्ण और जिम्मेदार मतदान ही लोकतंत्र को सुदृढ़, संवेदनशील और विकासोन्मुख बनाता है। भारतीय लोकतंत्र भी इस दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आलमंड, जी0 और वर्बा, एस0 (1963). द सिविक कल्चर, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू जर्सी, अमेरिका, पृ0 35–38
2. लोकनीति 2024. विकासशील समाजों के अध्ययन का केन्द्र, नई दिल्ली, पृ0 50–59
3. कैम्पबेल, ए0 कॉन्वर्स, पी0, मिलर, डब्ल्यू और स्टोक्स, डी0 (1960). द अमेरिकन वोटर, शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस, अमेरिका, पृ0 103
4. लोकनीति 2019. विकासशील समाजों के अध्ययन का केन्द्र, नई दिल्ली, पृ0 60–62
5. नॉरिस, पी0 (2004). चुनावी अभियांत्रिकी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, इग्लैण्ड, पृ0 47
6. निर्वाचन परिणाम 2019. भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली
7. एल्डर्सवेल्ड, एस0 जे0 (1972). वोटिंग बिहेवियर रिसर्च में सिद्धान्त और विधि, अमरिंद प्रकाशन कंपनी, नई दिल्ली, पृ0 267–271।
8. कैट, एच0 (1995). वोटिंग बिहेवियर, ऑकलैंड लीसेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ0 5
9. आलमंड, जी0 और वर्बा, एस0 (1963). द सिविक कल्चर, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू जर्सी, अमेरिका, पृ0 101–108
10. डाल्टन, आर0 जे0 (2013). नागरिक राजनीति, सीक्यू प्रेस, अमेरिका पृ0 152–154
11. लोकनीति 2019. विकासशील समाजों के अध्ययन का केन्द्र, नई दिल्ली, पृ0 60–62
12. डाल्टन, आर0 जे0 (2013). नागरिक राजनीति, सीक्यू प्रेस, अमेरिका पृ0 205–211
13. नॉरिस, पी0 (2004). चुनावी अभियांत्रिकी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, इग्लैण्ड, पृ0 84
14. रिकर, डब्ल्यू0 और ऑर्डेशूक, पी0 (1968). वोटिंग के कैलकुलस का एक सिद्धान्त, अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस रिव्यू, खंड 62, अंक 1
15. लोकनीति 2019. विकासशील समाजों के अध्ययन का केन्द्र, नई दिल्ली, पृ0 35–45

16. लिपसेट, एस0 (1959). लोकतंत्र की कुछ सामाजिक आवश्यकताएँ, अमेरिकी राजनीतिक विज्ञान समीक्षा, खंड 53, अंक 1
17. डाल्टन, आर0 जे0 (2013). नागरिक राजनीति, सीक्यू प्रेस, अमेरिका पृ0 281–285
18. लोकनीति 2024. विकासशील समाजों के अध्ययन का केन्द्र, नई दिल्ली, पृ0 35–52
19. यादव, वाई0 और पालशिकर, एस0 (2009). भारत में राज्य राजनीति पर दस थीसिस, सेमिनार जर्नल, नई दिल्ली, पृ0 591
20. निर्वाचन परिणाम 2024. भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली
21. वर्बा, एस0, श्लोजमैन, के0 और ब्रेडी, एच0 (1995). आवाज और समानता, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, अमेरिका, पृ0 159